१२

बाल-मित्र ज्ञान-विज्ञान माला

बाल सभा

बाल-मित्र ज्ञान विज्ञान माला

१२

बाल-सभा

सन्तराम वत्स्य

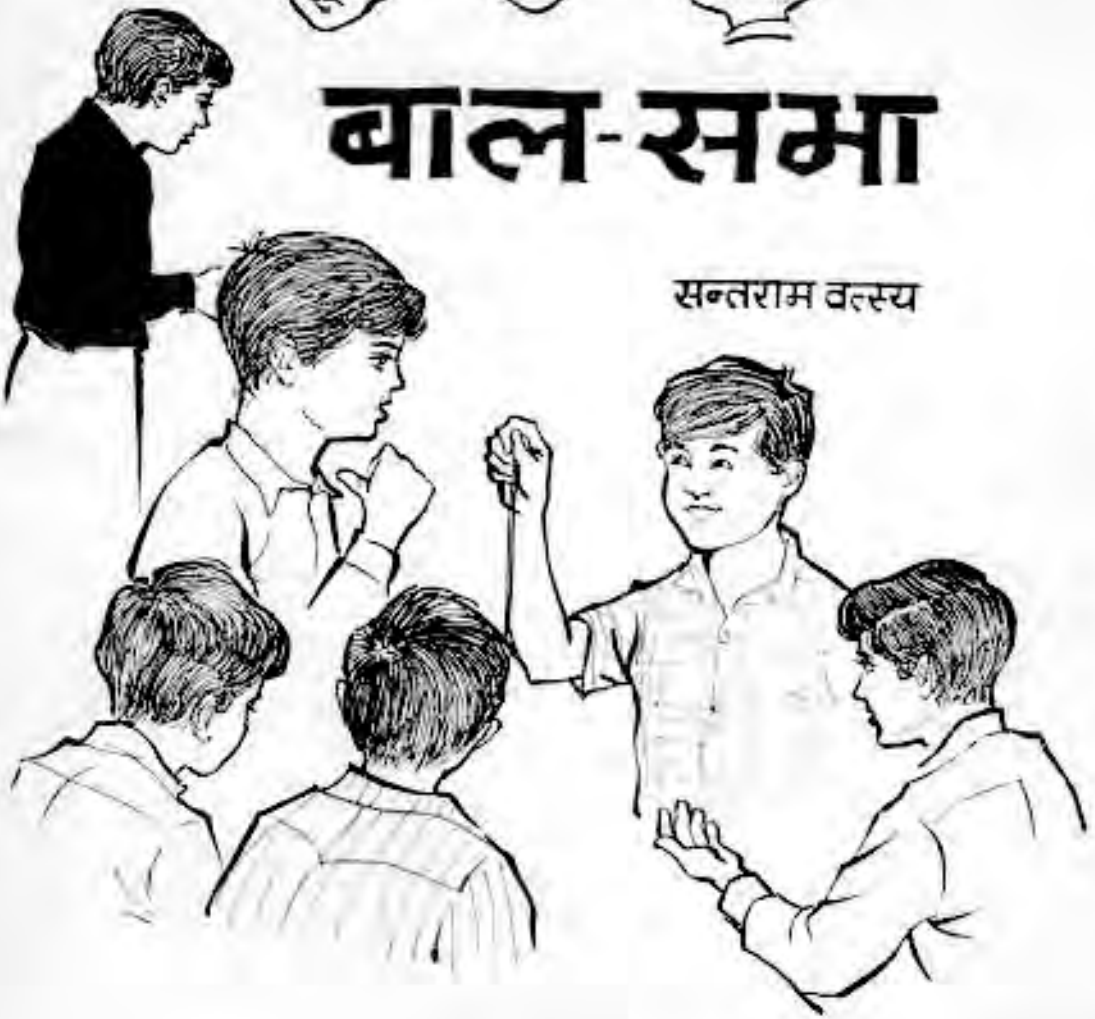

नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

मूल्य : एक रुपया पचास पैसे
प्रथम संस्करण, १९७०

चित्रकार
योगेन्द्रकुमार लल्ला

प्रकाशक
नेशनल पब्लिशिंग हाउस
२३, दरियागंज, दिल्ली-६

मुद्रक : राज कम्पोजिंग एजेन्सी द्वारा
सरस्वती प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली-३२

पाठशाला में मास के अन्तिम शनिवार को बालसभा होती है।
बालसभा में पाठशाला के सभी छात्र भाग लेते हैं।
बालसभा आधी छुट्टी के बाद होती है।
बालसभा के समय पढ़ाई नहीं होती है।

बालसभा पाठशाला के बच्चों की सभा है।
इस सभा का सारा कार्य बालक ही करते हैं।
बालक ही इसके सदस्य और अधिकारी होते हैं।
बालक ही इस सभा का कार्यक्रम बनाते
और प्रस्तुत करते हैं।
अध्यापक इस कार्य में उनकी सहायता करते हैं।
उपयोगी सुझाव देते हैं।

सभा की सारी कार्यवाही
सभापति की आज्ञा से होती है।
सभा का मंत्री बारी-बारी से
कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाले छात्रों के नाम पुकारता है
और सूचना देता है कि
अब यह कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाएगा।
जिस छात्र का नाम लिया जाता है,
वह मंच पर आकर अपना कार्यक्रम प्रस्तुत करता है।

बालसभा में कार्यक्रम प्रस्तुत करने से पहले
कुछ शिष्टाचारों का पालन करना होता है।
सबसे पहले सभापति महोदय तथा
सुनने वालों को सम्बोधित करना होता है।
जैसे :
"आदरणीय सभापति महोदय तथा छात्र-बन्धुओ!"
इसके बाद जो कार्यक्रम प्रस्तुत करना हो,
उसकी सूचना देनी चाहिए।
जैसे :
"मैं आपके मनोरंजन के लिए
कुछ चुटकुले सुनाऊँगा।"
इसके बाद मुख्य विषय को
प्रारम्भ करना चाहिए।

बालसभा पाठशाला के बड़े कमरे में होती है।
सभी छात्र ठीक समय पर, इस कमरे में
पंक्तियों में चुपचाप बैठ जाते हैं।
कमरे में एक ओर बोलने वालों और
सभा के अधिकारियों के लिए स्थान बना होता है।
एक मेज़ और कुछ कुर्सियाँ वहाँ रखी रहती हैं।
सभापति और मंत्री वहाँ बैठते हैं।
कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाला छात्र
वहीं से कार्यक्रम प्रस्तुत करता है।
मेज़ पर एक घड़ी रख लेते हैं
जिससे सभा का काम समय के अनुसार चलाया जा सके।

सभा का कार्यक्रम पहले से ही निश्चित
कर लिया जाता है।
कार्यक्रम लिखकर सूचना-पट्ट पर लगा दिया जाता है।
उसे पढ़कर छात्र जान जाते हैं कि कौन-सा छात्र
क्या कार्यक्रम प्रस्तुत करेगा।
कौन कब बोलेगा, किस विषय पर बोलेगा
और कितनी देर बोलेगा।

बालसभा में तुम अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत कर सकते हो।
जैसे :
कोई गीत, कविता, कहानी या निबन्ध सुना सकते हो।
अपनी किसी यात्रा का वर्णन,
किसी घटना, मेले या स्थान का हाल सुना सकते हो।
कोई छोटा-सा नाटक खेल सकते हो।
किसी त्यौहार के बारे में
या किसी महापुरुष के जीवन के बारे में बता सकते हो।

गड़बड़ रेडियो, चुटकुले, या जानवरों की बोलियां
सुनाकर सबको हँसा सकते हो।
किसी की नकल उतार सकते हो, और
दो दल बनाकर अन्त्याक्षरी कर सकते हो,
बहस कर सकते हो।
कोई जादू का खेल दिखा सकते हो।

पाठशाला में अनुशासन, पाठशाला की सफाई
और पाठशाला की फुलवाड़ी की देख-रेख के लिए
योजना बना सकते हो।
छात्र पाठशाला में समय पर आएँ,
गण-वेश पहनकर आएँ,
कक्षा में शांत होकर बैठें
और जिस दिन किसी कक्षा के अध्यापक छुट्टी पर हों,
उस दिन कक्षा को कोई छात्र ही पढ़ाए
इसकी व्यवस्था भी कर सकते हो।

और भी अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत किये जा सकते हैं।
छात्रों द्वारा बनाए चित्रों या दूसरी चीज़ों की
प्रदर्शनी की जा सकती है।
विभिन्न प्रदेशों के पहनावों को
प्रदर्शित किया जा सकता है।
हाथों की विभिन्न आकृतियाँ बनाकर,
उनकी छाया दीवार पर डालकर
छायाचित्र दिखाए जा सकते हैं।
लोक-गीत और लोक-कथाएँ भी
सुनाई जा सकती हैं।

पहली बार मंच पर बोलने में
बड़ी झिझक मालूम देती है।
टांगें काँपने लगती हैं
और जो कुछ बोलना होता है,
सब भूल जाता है।
गला सूखने लगता है।
कई बार भाषण को बीच में ही छोड़ देना पड़ता है।
बहुतों के साथ ऐसा ही होता है।
आज जो बड़े-बड़े नेता हैं
और बहुत अच्छा बोलते हैं,
प्रारंभ में वे भी
इसी तरह घबराते थे।

पहले-पहल इस बात की चिन्ता नहीं करनी चाहिए
कि मेरा भाषण अच्छा नहीं हुआ।
साथियों की हँसी से भी घबराना नहीं चाहिए।
कोई भी काम हो, वह धीरे-धीरे अभ्यास से ही आता है।
यह यत्न अवश्य करना चाहिए
कि जो कमियाँ पहली बार रह गई थीं,
दूसरी बार न रहें।
दो-चार बार बोलने पर झिझक दूर हो जाती है।

बालसभा में जो भी कार्यक्रम प्रस्तुत करना हो
उसे अच्छी तरह तैयार कर लेना चाहिए।
यदि आवश्यकता पड़े
तो अपने बड़े भाई, माता-पिता या अध्यापक से
सहायता ले लेनी चाहिए।
सहायता का अर्थ यह नहीं है कि
पूरे का पूरा कार्यक्रम दूसरे से तैयार करवा लिया जाए।
यदि किसी विषय पर बोलना हो
तो उसे पहले लिख लेना चाहिए
या उसकी मुख्य-मुख्य बातें
क्रम से लिख लेनी चाहिए,
और बोलते समय उस
कागज को खोलकर
सामने रख लेना चाहिए
जिससे कोई बात
छूट न जाए।

पूरे विश्वास के साथ
बिना घबराए और लजाए बोलना चाहिए।
बोलते समय सामने बैठे लोगों की ओर देखना चाहिए।
भाषण करते समय बहुत जोश नहीं दिखाना चाहिए।
भाषण का सबसे अच्छा तरीका यह है
कि बातचीत जैसा हो।
भाषण को रोचक बनाने के लिए
उसमें अपनी देखी-सुनी बातें जोड़नी चाहिए।
लोकोक्तियाँ, मुहावरे, चुटकुले और उदाहरणों से
भाषण में रोचकता आ जाती है।

बालसभा के द्वारा छात्रों को
अपनी विभिन्न रुचियों के अनुसार
भाषण, अभिनय या लेखन के रुझान को
आगे बढ़ाने का अवसर मिलता है।
उनकी योग्यता अध्यापकों के सामने आती है।
वे भविष्य में क्या बनने बाले हैं,
इसका कुछ-कुछ पता चल जाता है।

हमारे देश में प्रजातंत्र शासन है।
प्रजातंत्र शासन में बहुमत से चुने हुए प्रतिनिधि
सरकार को चलाते हैं।
बालसभा के अधिकारी भी छात्रों द्वारा चुने जाते हैं,
वे छात्रों के लिए काम करते हैं
और छात्र भी हाते हैं।
बालसभा को प्रजातंत्र का
पहला पाठ समझना चाहिए।

बोलना या लिखना
विचार प्रकट करने के यही दो प्रमुख उपाय हैं।
इसलिए इन्हें सीखना
सबके लिए बहुत
आवश्यक है।
बालसभा में
भाग लेने से
लिखना और
बोलना आता है,
बुद्धि का
विकास होता है।

बालसभा छात्रों के लिए बहुत उपयोगी है।
इससे उनकी, लोगों के सामने बोलने की
झिझक दूर होती है।
अपने विचारों को शब्दों में प्रकट करना आता है।
विचारों को नपे-तुले शब्दों में, प्रभावशाली ढंग से,
क्रम और व्यवस्था, तर्क और युक्ति के साथ
प्रस्तुत करना आता है।
इससे गुणों का विकास होता है।
अपने भावों और विचारों को
प्रकट करने का अवसर मिलता है।

जब हम किसी काम को
मिल-जुलकर करते हैं,
तो आपस में सहयोग करना सीखते हैं।
एक-दूसरे का मान-सम्मान करना सीखते हैं।
एक-दूसरे की छोटी-छोटी भूलों को
सहना सीखते हैं,
क्योंकि भूलें सभी से होती हैं,
हमसे भी होती हैं।

दूसरों के लिए मिलकर काम करना,
सबके सहयोग से काम करना,
सांझी जिम्मेदारी से काम करना,
नागरिकता के उत्तम गुणों में से एक गुण है।
यह प्रजातंत्र का आधार है।
जो काम हमें बड़े होकर करना है,
उसे बचपन से ही सीखना होगा।
बालसभा हमें इसे सिखाती है।

बालसभा के अधिकारी :
प्रधान-मंत्री आदि के चुनाव में
सबसे योग्य और अधिक काम करने वाले
छात्रों को ही चुनना चाहिए।
यदि कोई छात्र तुम्हारा मित्र या पड़ोसी हो,
किन्तु उस पद के योग्य न हो
तो उसका समर्थन नहीं करना चाहिए।

सभा का कोई पद संभालने के लिए
उन्हीं छात्रों को आगे आना चाहिए
जो सभा के काम में समय दे सकते हों।
और सब छात्रों का सहयोग ले सकते हों।
उनका पढ़ाई में भी योग्य होना आवश्यक है।
कोई पद संभाल लेने भर से
किसी का मान नहीं बढ़ता है।
मान तो गुणों का होता है।
काम करने से, सेवा करने से होता है।

छात्र प्रायः 'बुद्धू' का अभिनय करने वाले को 'बुद्धू' और 'ठग' का अभिनय करने वाले को 'ठग' कहकर चिढ़ाते हैं।
यह अच्छी बात नहीं है।
अभिनय तो अभिनय ही होता है।
और अगर कोई चिढ़ाए भी तो अभिनय करने वाले को बुरा नहीं मानना चाहिए।
न चिढ़ने पर, चिढ़ाने वाला स्वयं चुप हो जाता है।

दूसरों की बात को ध्यान से सुनना,
और अपनी बात को समझाकर कहना,
प्रजातंत्र प्रणाली में बहुत आवश्यक है।
'सभ्य' का अर्थ जानते हो ?
'सभा में जिसका व्यवहार अच्छा हो,
वह सभ्य होता है।'
इसलिए सभा से सम्बन्धित सभी शिष्टाचारों का
पालन करना सबके लिए आवश्क है।

बालसभा के अधिकारियों का कर्तव्य है कि
बारी-बारी सभी छात्रों को
कार्यक्रम प्रस्तुत करने के लिए बढ़ावा दें।
बार-बार उन्हीं छात्रों का कार्यक्रम होने से
बालसभा का उद्देश्य पूरा नहीं होगा।
बालसभा सारे छात्रों की सभा है।
इसलिए सभी को अवसर मिलना चाहिए।

तुम्हें चाहिए कि बालसभा के कार्यों में
पूरा-पूरा भाग लो।
सदा दर्शकों में बैठे देखते-सुनते ही मत रहो।
स्वयं भी कोई न कोई कार्यक्रम अवश्य प्रस्तुत करो।
इसकी तैयारी के लिए
बच्चों की पत्रिकाएँ पढ़ो
और रेडियो से बच्चों के कार्यक्रम सुनो।
दैनिक पत्रों के रविवार के संस्करण में
बालकों वाला पृष्ठ पढ़ो।
उसमें तुम्हें तरह-तरह की चीजें मिल जाएंगी।

सभा में समय पर पहुँच जाना चाहिए
और अन्त तक बैठे रहना चाहिए।
सभा में बैठकर गप्पें मारना, मूँगफली आदि खाना,
छींकना-खाँसना अच्छा नहीं लगता।
बाद में आकर आगे बैठना,
आगे बैठकर बीच में उठ खड़े होना अनुचित है।
बिना सोचे-समझे ताली बजाना भी ठीक नहीं।
सभापति से आज्ञा लिए बिना,
सभा में बोलने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए।

तुम बड़े होकर देश के नेता बनोगे।
प्रदेश की विधान सभा या संसद् के
सदस्य चुने जाओगे।
जनता को उसके कर्तव्य और अधिकार
समझाओगे।
जनता की बात सरकार तक पहुँचाओगे।
इन सब कामों में, प्रभावशाली भाषण से
बड़ी सहायता मिलेगी।

उच्च पाठशालाओं में
संसद् की नकल पर बैठकें होती हैं।
इनमें संसद् के नियमों का पालन किया जाता है।
कोई छात्र लोक-सभा का अध्यक्ष बनता है,
कोई प्रधान-मंत्री और कोई शिक्षा-मंत्री।
कुछ छात्र सरकारी पक्ष से बोलते हैं,
कुछ विरोधी पक्ष से।
सबसे अच्छा बोलने वालों को पुरस्कार दिये जाते हैं।

बालसभा के विविध कार्यक्रम
ऊब और उदासी को भगाकर
छात्रों का मनोरंजन करते हैं।
उनमें नया उत्साह भरते हैं।